धर्म-संस्कृति रक्षक
भगवान बिरसा मुंडा

15 नवम्बर यह जनजाति समाज धर्म संस्कृति के लिए और उनके अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले भगवान बिरसा मुंडा का जन्म दिवस। मुंडा समाज को जल, जमीन, जंगल का हक दिलाने के लिए संघर्ष करते-करते मात्र 25 वर्ष की आयु में लोगों ने उनको भगवान का स्थान दिया। ऐसा संघर्षशील जीवन जीने वाले बिरसा मुंडा आज भी जनजाति अस्मिता के महानायक कहलाते हैं। आज के झारखंड और पुराने छोटानागपुर क्षेत्र के उलीहातू गांव में 15 नवंबर 1875 को जन्मे बिरसा मुंडा थे तो वैसे एक सामान्य बालक, लेकिन मात्र 25 वर्ष की आयु में अपनी धर्म-संस्कृति के लिए जो अद्‌भुत कार्य उन्होंने किया, इसके कारण वह सबके भगवान बन गए।

बचपन में बिरसा के माता-पिता ने ईसाई धर्म स्वीकार किया था I उसकी बुद्धिमत्ता को देखते हुए उसे चाईबासा के मिशन स्कूल में प्रवेश दिलाया, लेकिन बात जब गोमांस खाने की और चोटी काटने की आई तब इस बालक के मन में विद्रोह की चिंगारी धधक उठी। इस चिंगारी का ज्वाला में तब परिवर्तन हुआ, जब मिशन के एक पादरी ने मुंडा समाज के बारे में ठग, बेईमान और चोर जैसे शब्दों का प्रयोग किया। मुंडाओं पर जुल्म करने वाले और हमारी जमीन हड़पने वाले आप ही लोग चोर और बेईमान है। आप में और जुर्म करने वाले ब्रिटिश सरकार में कोई भी फर्क नहीं इन कठोर शब्दों में पादरी को खरी खरी सुना कर बिरसा ने मिशन स्कूल छोड़ दिया।

'साहब-साहब एक टोपी' यानी अंग्रेज सरकार, ईसाई मिशनरी सब एक ही हैI आगे चलकर ये दोनों और इन दोनों को सहयोग देने वाले जमींदार बिरसा मुंडा के सबसे बड़े शत्रु बन गए। इसी बीच बिरसा का आनंद पांडा से संपर्क हुआ I उन्होंने रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथों का अध्ययन किया। इन ग्रंथों का उनके मन पर काफी गहरा प्रभाव निर्माण हुआ। धीरे धीरे एक आध्यात्मिक महापुरुष के रूप में उनका स्थान निर्माण होने लगा। बिरसाइयत नाम से उन्होंने एक अध्यात्मिक आंदोलन की शुरुआत की। मुंडा - उरांव और अन्य कई समाज के हजारों लोग इस आंदोलन में शामिल होने लगे। शराब मत पिओ, चोरी मत करो, गौ हत्या मत करो, पवित्र यज्ञोपवीत पहनो, तुलसी का पौधा लगाओ ऐसी छोटी-छोटी बातों से लोगों में एक आध्यात्मिक चेतना जागृत होने लगी।

बिरसा की इस बढ़ती ताकत का ब्रिटिश सरकार में एक डर पैदा हुआ।

उन्होंने छल कपट से बिरसा मुंडा को हजारिबाग की जेल में कैद कर लिया। लेकिन वह उसे ज्यादा दिन जेल में रख नहीं पाए। जेल से छूटने के बाद तो बिरसा ने मानो अंग्रेज सरकार को उखाड़ फेंकने का निश्चय ही किया। जल, जमीन और जंगल के अधिकारों के लिए उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ एक प्रखर आंदोलन शुरू किया। इसी संदर्भ में 9 जनवरी 1900 को डोंबारी पहाड़ी पर एक विशाल जनसभा का आयोजन किया गया था। इस आंदोलन को कुचलने के लिए ब्रिटिश सरकार ने स्ट्रीटफील्ड के नेतृत्व में आंदोलकों पर अंधाधुंध गोलियां चलाई। जिसमें हजारों मुंडा बलिदान हो गए। कहा जाता है कि जालियनवाला बाग जैसा ही यह एक भयंकर एवं सुनियोजित हत्याकांड था।

अब अंग्रेजों ने बिरसा को पकड़ने के लिए इनाम घोषित कियाI कुछ दिनों के बाद अंग्रेज सरकार बिरसा मुंडा को पकड़ने में कामयाब हो गई। उनको रांची के जेल में रखा गया। लेकिन 9 जून 1900 को संदेहास्पद अवस्था में बिरसा की मृत्यु हो गई। हालांकि उनके मृत्यु का कारण हैजा दिया गया, लेकिन ऐसा कहा जाता है कि अंग्रेज शासन द्वारा विष प्रयोग कर उनकी हत्या कर दी गई।

भगवान बिरसा मुंडा की जीवन लीला तो समाप्त हो गई, लेकिन स्वधर्म, संस्कृति और स्वदेश की रक्षा की जो ज्योति उन्होंने प्रज्वलित की थी, उसी को सहारा बना कर सैकड़ों क्रांतिकारियों ने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

बिरसा मुंडा जनजाति अस्मिता के ऐसे महानायक थे, जिनकी प्रेरणा आज भी हमें धर्म - संस्कृति के प्रति जागरूक रहने का संदेश देती है। आज हम भारत की स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव बड़ी धूमधाम से मना रहे हैं। लेकिन यह स्वर्ण क्षण दिखाने में भगवान बिरसा मुंडा जैसे हमारे हजारों जनजाति वीरों के बलिदान को हमें बिल्कुल नहीं भूलना चाहिए। इन्हीं बलिदानी वीरों की याद में 15 नवंबर यह बिरसा मुंडा का जन्म दिवस जनजातिय गौरव दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले सभी क्रांतिकारियों को शत शत नमन।

भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी
भगवान बिरसा मुंडा

बिरसा मुंडा.. 1875 से 1900 ऐसे केवल पच्चीस वर्ष की आयु। इतनी कम आयु में युवा बिरसा लाखों जनजाति बंधुओं के भगवान बन गए। 15 नवंबर 1875 को आज के झारखंड प्रांत के उलीहातू गांव में बिरसा मुंडा का जन्म हुआ। प्रखर बुद्धिमत्ता के कारण उसको जर्मन मिशन स्कूल में भर्ती किया गया। इसके लिए विरसा का पूरा परिवार ईसाई बन गया। लेकिन जर्मन मिशन ने चर्च के लिए मुंडा गांव की जमीन की मांग की जिस पर कुछ मुंडा लोगों ने आक्षेप लिया। इससे क्रुद्ध होकर फादर नोट्रोट ने मुंडाओं के बारे में अपशब्द कहे। जिससे 14 वर्ष का बिरसा क्रुद्ध हुआ और उसने कड़ा जवाब उस फादर को दिया, परिणाम स्वरूप उसको जर्मन मिशन स्कूल से निकाल दिया गया।

स्कूल से निकालने के बाद बिरसा ने अपने समाज का चिंतन कर अशिक्षा, गरीबी,अज्ञानता से अपने समाज को बाहर निकालने का निश्चय किया। इसी दरम्यान पांड नाम के एक व्यक्ति के पास उसने रामायण महाभारत जैसे ग्रंथों का अध्ययन किया। मुंडा लोगों को संगठित करने का काम उसने शुरू किया। मुंडा जनजातियों का जबरदस्त समर्थन बिरसा को मिलने लगा। मुंडाओं का स्वाभिमान जागृत होने लगा। लोगों ने जमींदारों के सामने झुकने से इनकार कर दिया,चर्च में जाना छोड़ कर मुंडा लोग विरसा के साथ भजन, कीर्तन करने लगे। इससे तत्कालीन अंग्रेज अंग्रेज सरकार घबरा गई और उसने बिरसा को कैद कर लिया। लेकिन 2 साल की शिक्षा के बाद बिरसा जब जेल से बाहर आया तो हजारों लोग उसके स्वागत के लिए उपस्थित थे। फिर बिरसा ने

बिरसाईयत नामसे आध्यात्मिक संगठन प्रारंभ किया। लोग उसे भगवान मानने लगे। एक प्रभावी संगठन बनाने के बाद वनवासियों को लूटने वाले जमीनदार, अंग्रेज और ईसाई मिशनरी यह हमारे सबसे बड़े दुश्मन है ऐसा विचार रखकर बिरसा ने तत्कालीन छोटा नागपुर क्षेत्र में अंग्रेजो के खिलाफ संघर्ष प्रारंभ किया। अपनी इस लड़ाई को उसने उलगुलान का नाम दिया।

मुंडा लोगों के प्रतिकार से अंग्रेज सरकार कांप गई। उन्होंने किसी भी हाल में बिरसा को पकड़ने का निश्चय किया। डोंबरी पहाड़ पर हजारों मुंडा लोग एकत्रित आने वाले हैं, इस बात का पता चलते ही अंग्रेजों ने उस पर धावा बोल दिया। अंधाधुंध गोलियां चलाई गई, जिसमें हजारों मुंडा लोग वीरगति प्राप्त हो गए। इस भयानक नरसंहार के बाद भी बिरसा का कार्य चलता ही गया। उसको ज्यादा दिन बाहर रखना खतरनाक हो सकता है, यह सोचकर अंग्रेजों ने बिरसा को पकड़ने के लिए 500 रुपये का इनाम घोषित किया। फिर भी उसका परिणाम नहीं हुआ। एक दिन बिरसा को पकड़ने में अंग्रेज सरकार कामयाब हुई। उसको रांची के जेल में रखा गया। आखिर 9 जून 1900 को बिरसा की रांची के जेल में ही मृत्यु हो गई। एशियाटिक हैजा होने के कारण उसकी मृत्यु हुई ऐसा अंग्रेज सरकार द्वारा घोषित किया गया,लेकिन उस पर विष प्रयोग कर उसको मार दिया ऐसा भी कहा जाता है।
25 वर्ष की अल्पायु में बिरसा ने अपने देश की स्वतंत्रता के लिए अपनी प्राणों का बलिदान किया। बिरसा केवल जनजाति समाज का ही नहीं तो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण योद्धा माना जाता है।
15 नवम्बर यह भगवान बिरसा मुंडा का जन्म दिवस।
भारत माता के इस महान क्रांतिकारी सपूत को शत शत नमन।

धरती आबा
भगवान बिरसा मुंडा

भगवान बिरसा मुंडा 19 वीं सदी में हुए स्वतंत्रता संग्राम के जनजाति नायक थे। वनवासियों के जल, जंगल, जमीन और स्वत्व की रक्षा के लिए उन्होंने लंबा संघर्ष किया। स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले बिरसा ने उलगुलान क्रांति का आह्वान किया। जनजाति संस्कृति, स्वाभिमान और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए बिरसा के संघर्ष ने अंग्रेजी राज को हिला कर रख दिया।

भारत वर्ष के विभिन्न प्रान्तों में बसी लगभग 300 जनजातियों के सपूतों की गौरव गाथा जब हम याद करते हैं तो एक स्वर्णिम नाम उभरता है, बिरसा मुण्डा । जिसे अपने जनजाति बंधु प्यार और श्रद्धा के साथ बिरसा भगवान के रूप में नमन करते हैं। जनजातीय समाज को नई दिशा देने वाले क्रांतिकारी बिरसा मुंडा का जन्म रांची जिले के उलिहातु गांव में 15 नवम्बर 1875 को हुआ था। पिता सुगना मुण्डा और माता करमी अत्यन्त निर्धन थे और दूसरे गाँव जाकर मजदूरी का काम किया करते थे। उनके दो भाई एवं दो बहनें भी थीं। बिरसा का बचपन एक सामान्य वनवासी बालक की तरह बीता। माता-पिता ने उन्हें पढ़ने के लिए मामा के घर आयुबहातु भेज दिया। जहां बिरसा ने भेड़-बकरियां चराने के साथ-साथ शिक्षक जयपाल नाग से अक्षर ज्ञान और गणित की प्रारम्भिक शिक्षा पाई।

बिरसा ने बुर्जू मिशन स्कूल में प्राथमिक शिक्षा पाई। आगे की पढ़ाई के लिए वे चाईबासा के लूथरेन मिशन स्कूल में दाखिल हुए जहाँ बिरसा की शिखा काटी गई। उनके मन को बड़ा आघात लगा। वहां उन्होंने अपने धर्म पर संकट महसूस किया। बिरसा ने ईसाइयों के षड़यंत्र को भाँप लिया। बिरसा धर्म रक्षा का संकल्प लेकर गांव लौटें। 1891 में चाईबासा से लौटने के बाद बिरसा बंदगांव आ गए। यहां लोग उनके अनुयायी बनने लगे। एक जन आंदोलन खड़ा हो गया।

बिरसा ने मुण्डा युवकों का एक संगठन बनाया। सामाजिक सुधारों के साथ-साथ राजनीतिक शोषण के विरुद्ध लोगों को जागरूक किया। बिरसा ने आह्वान किया कि अंग्रेज शासन और गोरे विदेशी पादरी- फादर मिलकर इस देश को भ्रष्ट करना चाहते हैं। दोनों की टोपियां एक हैं, दोनों के लक्ष्य एक हैं। वे हमारे देश को गुलाम बनाना चाहते हैं। बिरसा ने अपनी स्वतंत्रता के लिए नारा दिया "अबुआ दिशोम अबुआ राज का"। "अपना देश, अपनी माटी"

के बिरसा के इस शंखनाद से जनजाति युवक जाग उठे। चलकद ग्राम में एक आश्रम, एक आरोग्य निकेतन और एक क्रांति का गढ़ बन गया।अंग्रेज सरकार ने हर संभव उपाय कर बिरसा की क्रांति को कुचलने का आदेश दिया।

25 अगस्त 1895 को छल कपट से पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और हजारीबाग जेल ले गए। 30 नवम्बर 1897 को बिरसा रिहा हुए और 1899 में उनका आंदोलन शुरू हुआ। 9 जनवरी 1900 के दिन बिरसा ने जोजोहातु के निकट डोम्बारी पहाड़ियों में एक सभा आयोजित की जिसमें हजारों की संख्या में लोग एकत्र हुए। कमिशनर स्ट्रीटफील्ड को खबर मिली तो उसने पूरे पहाड़ को घेर लिया। आन्दोलनकारियों पर अंधाधुंध गोलियां चलाई। इधर बंदूकें थी, उधर पत्थर और तीर-धनुष हजारों के खून से पहाड़ी रंग गई। अंतत: अंग्रेजों ने डोम्बारी पर्वत पर कब्जा कर लिया लेकिन मुक्ति-नायक बिरसा उनके हाथ नहीं लगे। दुर्योग से दो गद्दार अंग्रेजों से जा मिले। 3 फरवरी को गुप्तचरों और भेदियों की मदद से बंदगाव में उन्हें पकड़ लिया गया। उन्हें हथकड़ी पहनाकर रांची जेल
लाया गया। 9 जून 1900 के दिन स्वतंत्रता के इस महानायक की रहस्यमय ढंग से रांची जेल में मृत्यु हो गई। कहा गया कि उन्हें हैजा हो गया था, लेकिन लोगों की धारणा थी कि उन्हें मारा गया था। चुपचाप एक नाले के किनारे उनके शव को जला दिया गया।

भारत सरकारने 15 नवम्बर यह दिवस जनजाति गौरव दिवस के रूप में मनाने क निर्णय लिया है। आइये सम्पूर्ण देश भगवान बिरसा मुंडा के साथ साथ सभी ज्ञात अज्ञात जनजाति जनजाति महापुरुषों का स्मरण कर उनके बलिदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करे।भगवान बिरसा के प्रेरक व्यक्तित्व को शत शत नमन।

बिरसा मुंडा : शक्ति और साहस के परिचायक

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतभूमि पर ऐसे कई नायक पैदा हुए जिन्होंने इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों से लिखवाया. एक छोटी सी आवाज को नारा बनने में देर नहीं लगती बस दम उस आवाज को उठाने वाले में होना चाहिए और इसकी जीती जागती मिसाल थे बिरसा मुंडा. बिरसा मुंडा ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अहम भूमिका निभाई.

अपने कार्यों और आंदोलन की वजह से बिहार और झारखंड में लोग बिरसा मुंडा को भगवान की तरह पूजते हैं. बिरसा मुण्डा ने ब्रिटिश शासन, जनजातियों पर अत्याचार करनेवाले जमींदारों के खिलाफ संघर्ष किया. बिरसा मुण्डा ने अपनी सुधारवादी प्रक्रिया के तहत सामाजिक जीवन में एक आदर्श प्रस्तुत किया. उन्होंने नैतिक आचरण की शुद्धता, आत्म-सुधार और एकेश्वरवाद का उपदेश दिया. उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के अस्तित्व को अस्वीकारते हुए अपने अनुयायियों को सरकार को लगान न देने का आदेश दिया था.

बिरसा मुंडा का जन्म 1875 में झारखंड के उलिहातु, में हुआ था. साल्गा गांव में प्रारंभिक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल में पढने आए. सुगना मुंडा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा के मन में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ बचपन से ही विद्रोह था. बचपन में बिरसा एक बेहद चंचल बालक थे. बचपन का अधिकतर समय उन्होंने अखाड़े में बिताया. हालांकि गरीबी की वजह से उन्हें रोजगार के लिए समय-समय पर अपना घर बदलना पड़ा. इसी भूख की दौड़ ने ही उन्हें स्कूल की राह दिखाई चाईबासा में बिताए चार सालों ने बिरसा मुंडा के जीवन पर गहरा असर डाला. इसाई पादरी के साथ उनका यही पहला संघर्ष हुआ. मिशन स्कूल में उनकी चोटी कटाने की वजह के कारण उन्होने मिशन स्कूल छोड़ दिया. 1895 तक बिरसा मुंडा एक सफल नेता के रुप में उभरने लगे जो लोगों में जागरुकता फैलाना चाहते थे. 1894 में आए अकाल के दौरान बिरसा मुंडा ने अपने मुंडा समुदाय और अन्य लोगों के लिए अंग्रेजों से लगान माफी की मांग के लिए आंदोलन किया.

1895 में उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया और हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी. लेकिन बिरसा और उनके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और यही कारण रहा कि अपने जीवन काल में ही उन्हें एक महापुरुष का दर्जा मिला. उन्हें उस इलाके के लोग “धरती आबा’ के नाम से पुकारा और पूजा करते थे. उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी.1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया. अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूंटी थाने पर धावा बोला. 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से जनजाति नेताओं की गिरफ़्तारियां हुईं. जनवरी 1900 में जहाँ बिरसा अपनी जनसभा संबोधित कर रहे थे, डोमबारी पहाड़ी पर एक और संघर्ष हुआ था, जिसमें बहुत सी महिलाये और बच्चे मारे गये थे. बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ़्तारी भी हुई थी. अंत में स्वयं बिरसा 3 फरवरी, 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ़्तार हुए. बिरसा ने संदिग्ध अवस्था में अपनी अंतिम सांसें 9 जून, 1900 को रांची कारागर में ली.

यह साल स्वतंत्रता का अमृत महोत्सवी काल है. भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष और बलिदान करने वाले वीरोंका स्मरण करना हमारा कर्तव्य है. जिन क्रन्तिकरियोने देश के लिए बलिदान दिया ऐसे क्रान्तिकारियों की

मालिका में भगवान बिरसा मुंडा यह नाम आज भी श्रद्धा और गौरव के साथ लिया जाता है. भारत सरकारने 15 नवम्बर यह दिवस जनजाति गौरव दिवस के रूप में मनाने क निर्णय लिया है. आइये सम्पूर्ण देश भगवान बिरसा मुंडा के साथ साथ सभी ज्ञात अज्ञात जनजाति जनजाति महापुरुषों का स्मरण कर उनके बलिदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करे.

जनजातीय अस्मिता के महानायक
भगवान बिरसा मुंडा

बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1875 को झारखंड के जनजाति दम्पति सुगना और करमी के घर हुआ था। भारतीय इतिहास में बिरसा मुंडा एक ऐसे नायक थे, जिन्होंने भारत के झारखंड में अपने क्रांतिकारी चिंतन से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जनजाति समाज की दशा और दिशा बदलकर नवीन सामाजिक और राजनीतिक युग का सूत्रपात किया। बिरसा मुंडा ने साहस की स्याही से पुरुषार्थ के पृष्ठों पर शौर्य की शब्दावली रची।

बिरसा मुंडा ने महसूस किया कि आचरण के धरातल पर जनजाति समाज अंधविश्वासों की आंधियों में तिनके-सा उड़ केरहा है तथा आस्था के मामले में भटका हुआ है। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि सामाजिक कुरीतियों के कोहरे ने समाज को ज्ञान के प्रकाश से वंचित कर दिया है। भारतीय जमींदारों और जागीरदारों तथा ब्रिटिश शासकों के शोषण की भट्टी में आदिवासी समाज झुलस रहा था। बिरसा मुंडा ने आदिवासियों को शोषण की यातना से मुक्ति दिलाने के लिए उन्हें तीन स्तरों पर संगठित करना आवश्यक समझा। पहला तो सामाजिक स्तर

पर ताकि जनजाति समाज अंधविश्वासों और ढकोसलों के चंगुल से छूट कर पाखंड के पिंजरे से बाहर आ सके। इसके लिए उन्होंने ने जनजातियों को स्वच्छता का संस्कार सिखाया। शिक्षा का महत्व समझाया। सहयोग और सरकार का रास्ता दिखाया।

सामाजिक स्तर पर जनजातियों के इस जागरण से जमींदार-जागीरदार और तत्कालीन ब्रिटिश शासन तो बौखलाया ही, पाखंडी झाड़-फूंक करने वालों की दुकानदारी भी ठप हो गई। यह सब बिरसा मुंडा के खिलाफ हो गए। उन्होंने बिरसा को साजिश रचकर फंसाने की काली करतूतें प्रारंभ की। यह तो था सामाजिक स्तर पर बिरसा का प्रभाव। काले कानूनों को चुनौती देकर बर्बर ब्रिटिश साम्राज्य को सांसत में डाल दिया।

2. दूसरा था आर्थिक स्तर पर सुधार ताकि जनजाति समाज को जमींदारों और जागीरदारों क आर्थिक शोषण से मुक्त किया जा सके। बिरसा मुंडा ने जब सामाजिक स्तर पर जनजाति समाज में चेतना पैदा कर दी तो आर्थिक स्तर पर सारे जनजाति शोषण के विरुद्ध स्वयं ही संगठित होने लगे। बिरसा मुंडा ने उनके नेतृत्व की कमान संभाली। जनजातियों ने 'बेगारी प्रथा' के विरुद्ध जबर्दस्त आंदोलन किया। परिणामस्वरूप जमींदारों और जागीरदारों के घरों तथा खेतों और वन की भूमि पर कार्य रूक गया।

3. तीसरा था राजनीतिक स्तर पर जनजातियों को संगठित करना। चूंकि उन्होंने सामाजिक और आर्थिक स्तर पर जनजातियों में चेतना की चिंगारी सुलगा दी थी, अतः राजनीतिक स्तर पर इसे आग बनने में देर नहीं लगी। आदिवासी अपने राजनीतिक अधिकारों के प्रति सजग हुए।

बिरसा मुंडा सही मायने में पराक्रम और सामाजिक जागरण के धरातल पर तत्कालीन युग के एकलव्य और स्वामी विवेकानंद थे। बिरसा मुंडा की गणना महान देशभक्तों में की जाती है। ब्रिटिश हुकूमत ने इसे खतरे का संकेत समझकर बिरसा मुंडा को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया। वहां अंग्रेजों ने उन्हें धीमा जहर दिया था। जिस कारण वे 9 जून 1900 को शहीद हो गए।

(वेबदुनिया मैं प्रकाशित आर्टिकल का संपादित अंश)

बिरसा की शहादत आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है

9 जून बिरसा के शहादत का दिन है। 9 जून 1900 ई. को सुबह 9 बजे राँची जेल में उनका देहांत हुआ था। उसी दिन शाम को राँची डिस्टिलरी के पास हरमू नदी के किनारे उनकी अंतिम क्रिया संपन्न कर दी गई। फिलहाल उसी जगह 'बिरसा शहीद स्थल' का निर्माण किया गया है।

कौन थे बिरसा? क्या थी उनकी खासियत जिसके कारण आज उनको क्रांति का अग्रदूत माना जाता है? कब, कहाँ हुआ था उनका जन्म? उनकी शहादत को इतनी अहमियत क्यों दी जाती है?

बिरसा मुण्डा का जन्म 15 नवम्बर 1875 ई. को चलकद के पास बंबा गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम सुगना मुण्डा और माता का नाम करमी था। वे साधारण किसान थे। उन दोनों ने ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया था। बिरसा मुण्डा की भी ईसाई धर्म में दीक्षा हुई। उनका नाम दाऊद रखा गया था। बुर्जू मिशन से उनकी पढ़ाई शुरू हुई। उनको बांसुरी बजाने का बड़ा शौक था। पढ़ाई के सिलसिले में वे 1890 ई. तक चाईबासा मिशन में रहे। वहाँ उनको फादर नोत्रोत का व्यवहार अच्छा नहीं लगता था। उन्होंने ईसाई धर्म छोड़ दिया। पढ़ाई भी छूट गयी। धीरे–धीरे उनको अपने समाज का दुःख–दर्द समझ में आने लगा। 1895 में उनको मुक्ति का एक मार्ग दिखाई

पड़ा। उन्होंने अपने गाँव–समाज की सेवा शुरू की। लोग उनको धरती आबा, बिरसा भगवान, क्रांतिदूत आदि कहने लगे। चलकद में भीड़ उमड़ने लगी।

झारखण्ड का आधुनिक इतिहास विद्रोहों का इतिहास है। बंगाल का मिदनापुर जिला 1760 ई. में ही अंग्रेजों के अधीन आ चुका था। मुगलों से बिहार–बंगाल की दीवानी मिलने के बाद 1767 ई. में अंग्रेजों ने मिदनापुर की ओर से धालभूमगढ़ (घाटशिला) पर आक्रमण किया। तीन–चार वर्षों के अन्दर पलामू किला पर भी उनका कब्जा हो गया। धीरे–धीरे झारखण्ड के राजा–महाराजा और जागीरदार उनकी अधीनता स्वीकार करने को विवश हुए। नया सनद देकर उनसे मालगुजारी वसूल की जाने लगी। यहाँ के लोग प्रतिरोध करते रहे। लेकिन अंग्रेजों का शिकंजा कसता गया।

1793 ई. में अंग्रेजों ने स्थायी बन्दोबस्ती (जमींदारी व्यवस्था) शुरू की। जंगलों पर भी जमींदारों का अधिकार हो गया। स्थायी बन्दोबस्ती के प्राक्धानों के तहत मालगुजारी नहीं देने वालों की जमीन–जायदाद नीलाम की जाने लगी। झारखण्ड में जमीन–जगह पर कोई कर नहीं लगता था। जरूरत पड़ने पर चन्दा–बेहरी से काम चलता था। जंगल–जमीन पर आबाद करने वालों का पूरा अधिकार माना जाता था। इसे ही इस क्षेत्र में खुँटकट्टी, भुंइहरी और कोड़कर हक कहा जाता था। नये कानून के तहत मालगुजारी नहीं दे पाने के कारण जमीनें नीलाम की जाने लगीं। विलियम हंटर के अनुसार इस कानून के कारण तत्कालीन बंगाल की आधी से अधिक जमीन सूदखोर–महाजनों के हाथ चली गयी। यहाँ के लोग अपने खानदानी हकों से बेदखल होने लगे। इसी के प्रतिकार में यहाँ बगावतों का सिलसिला शुरू हुआ। यह सिलसिला यहाँ आज भी जारी है।

बिरसा मुण्डा के पहले बुण्डू–तमाड़ क्षेत्र में 1793 से 1820 तक रूदू मुण्डा, कोन्ता मुण्डा, बिसुन मानकी ने इस आंदोलन की अगुवाई की। 1831–32 में सिंगराय–बिंदराय मानकी ने बंदगाँव से कोल–विद्रोह का मशाल जलाया। 1855–56 में संथालपरगना में सीधू–कान्हू ने संथाल हूल का सूत्रपात किया। 1857 में विश्वनाथ शाहदेव, गणपत राय, शेख भिखारी, नीलाम्बर–पीताम्बर ने अंग्रेजों के पसीने छुड़ाये।

इस लड़ाई का अगला चरण 1860 में शुरू हुआ जो सरदारी लड़ाई के नाम से विख्यात है। इस लड़ाई का चरम विस्फोट बिरसा आंदोलन में हुआ। बिरसा ने अपने पुरखों के अधिकारों की रक्षा के लिए अपने लोगों को संगठित किया। उनका मुख्य नारा था 'अबुआ दिसुम, अबुआ राज' यानी हमारे इलाके में हमारा राज रहेगा। उन्होंने अंग्रेजों और उनके सहायकों को यहाँ से भगाने का संकल्प लिया। उनका आह्वान था–'हेंदे रम्बरा केचे केचे, पुंडी रम्बरा केचे केचे'। यानी काले और गोरे सभी साहबों को मार भगाओ।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बिरसा ने अपने लोगों की कमजोरियों और बुराइयों को दूर करना जरूरी समझा। इसके लिए उन्होंने 'बिरसा धर्म' चलाया। आन्दोलन के दिनों में उन्होंने इस काम की जिम्मेवारी सीमा मुण्डा को दी थी। राजनीतिक आंदोलन का जिम्मा डोंका मुंडा को दिया गया था। भरमी मुंडा, गया मुंडा उनके अभिन्न साथी थे। गाँव–गाँव में प्रचारक भेजे जाते थे। उन्होंने स्वयं चुटिया नागफेनी, नवरतनगढ़, पालकोट की यात्रा की और लोगों को जागृत किया।

बिरसा आन्दोलन के दो चरण थे। पहले चरण की शुरुआत 1895 में हुई थी। इसमें सरदार आन्दोलन के अग्रणी गिदयुन एलियाजर और प्रभुदयाल उनके सहयोगी थे। 24–27 अगस्त की रात को उनलोगों ने कई जगहों पर आक्रमण की तैयारी की थी। पर सरकार को इसकी भनक मिल गयी। पुलिस अधीक्षक मीयर्स से ने चलकद में बिरसा को गिरफ्तार कर जेल भिजवा दिया। नवम्बर 1985 में उनको दो वर्ष कैद और 50 रु. जुर्माना की सजा हुई। 30 नवम्बर 1897 को बिरसा हजारीबाग जेल में मुक्त हुए। उनको कड़ी ताकीद के साथ चलकद भेजा गया। इधर युद्ध की तैयारी चल रही थी। 24 दिसम्बर 1899 को आन्दोलन का दूसरा चरण शुरू हुआ। चक्रधरपुर, खूँटी, कर्रा, तोरपा, तमाड़, बसिया आदि में बिरसा के सशस्त्र

अनुयायी अपनी मुक्ति के लिए निकल पड़े। इसका अन्तिम मोर्चा शैल रकाब, डोमबारी बुरू में केन्द्रित था। राँची के डिप्टी कमिश्नर एच.सी. स्ट्रोटफील्ड ने यहाँ मोर्चा संभाला। दूर–दूर से सेना मंगायी गयी। अनेक लोग हताहत हुए। आंदोलन बिखरने लगा। संतरा के जंगलों में बिरसा धोखे से पकड़े गये। उन पर और उनके साथियों पर मुकदमें चले। इसी मुकदमे के दौरान 9 जून 1900 ई. को सुबह 9 बजे राँची जेल में उनका देहावसान हुआ।

बिरसा एक गरीब किसान का बेटा था। उनकी पढ़ाई–लिखाई अधिक नहीं थी। फिर भी 25 वर्ष की अवस्था में उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को चुनौती दी थी। उनका नारा, 'अबुआ दिसुम अबुआ राज' आज भी जिन्दा है, प्रासंगिक है। इस क्रांतिदूत की शहादत आज भी हमारे लिए मार्गदर्शक है। हम उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। आज झारखण्ड की मुक्ति के लिए एक नहीं, दर्जनों बिरसा मुण्डाओं की जरूरत है। क्या आप इसके लिए तैयार हैं?

– विसेश्वर प्रसाद केसरी

१५ नोव्हेंबर भगवान बिरसामुंडा जयंती
"जनजाति गौरव दिवस"

◆जन्म 15 नवम्बर 1875
◆स्वर्गारोहण 9 जून 1900
भगवान बिरसा मुंडा के उपदेश का सार
◆ईश्वर याने खंगबोंग एक है
◆गौ की सेवा करो एवं समस्त प्रणियों के प्रति दया भाव रखो।
◆नशा मत करो
◆सादा रहो,घर साफ सुथरा रखो,अपने घरमें तुलसी का पौधा लगाओ।
◆बडों का आदर करो,कुसंगति से बचो।
◆ईसाईयों के मोह जाल में मत फंसो
◆पराये धर्म से अच्छा स्व धर्म है।
◆अपनी संस्कृति,धर्म और अपने पूर्व जों के प्रति अटूट श्रध्दा रखो।
◆धर्म संस्कृति,परंपरा को भूलने से समाज की पहचान मिटती है।"
◆एकजुट रहो कभी आपस में मत लडो।
◆सप्ताह में एक दिन बृहस्पतिवारको भगवानकी पूजा करो,उस दिन हल मत चलाओ।

Who was Birsa Munda?

Though he lived a short span of life, Birsa Munda is known to have mobilised the tribal community against the British and had also forced the colonial officials to introduce laws protecting the land rights of the tribals.

Birsa Munda was a young freedom fighter and a tribal leader, whose spirit of activism in the late nineteenth century, is remembered to be a strong mark of protest against British rule in India. Born and raised in the tribal belt around Bihar and Jharkhand, Birsa Munda's achievements are known to be even more remarkable by virtue of the fact that he came to acquire them before he was 25. In recognition of his impact on the nationals movement, the state of Jharkhand was created on his birth anniversary in 2000.

Born on November 15, 1875, Birsa spent much of his childhood moving from one village to another with his parents. He belonged to the Munda tribe in the Chhotanagpur Plateau area. He received his early education at Salga under the guidance of his teacher Jaipal Nag. On the recommendation of Jaipal Nag, Birsa converted to Christianity in order to join the German Mission school. He, however, opted out of the school after a few years.

The impact of Christianity was felt in the way he came to relate to religion later. Having gained awareness of the British colonial ruler and the efforts of the missionaries to convert tribals to Christianity, Birsa started the faith of 'Birsait'. Soon members of the Munda and Oraon community started joining the Birsait sect and it turned into a challenge to British conversion activities.

During the period, 1886 to 1890, Birsa Munda spent a large amount of time in Chaibasa which was close to the centre of the Sardars agitation. The activities of the Sardars had a strong impact on the mind of the young Birsa, who soon became a part of the anti-missionary and anti-government program. By the time he left Chaibasa in 1890, Birsa was strongly entrenched in the movement against the British oppression of the tribal communities.

On March 3, 1900, Birsa Munda was arrested by the British police while he was sleeping with his tribal guerilla army at Jamkopai forest in Chakradharpur. He died in Ranchi jail on June 9, 1900 at a young age of 25. Though he lived a short span of life and the fact that the movement died out soon after his death, Birsa Munda is known to have mobilised the tribal community against the British and had also forced the colonial officials to introduce laws protecting the land rights of the tribals. Birsa's achievements as a young tribal revolutionary has continued to be celebrated over decades now and he has successfully

carved out a space for himself in popular and folk literature, academia, and mass media.

(Indian Express)